नोएडा संस्करण
वर्ष-12, अंक - 43
गुरुवार, 05 अगस्त, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 5 रु*
नोएडा, लखनऊ, झांसी और देहरादून से प्रकाशित
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार
दैनिक भास्कर
For epaper → www.updainikbhaskar.com

टीकाकरण कारगर है।
आज ही टीका लगवाएं।
Rotary
SDG CHOUPAL
06 विपत्तिकाल में मदद करने वाला ही सच्चा मित्र

शोक सभा | **पद्मा सचदेव डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री थीं**

साहित्य अकादमी ने अपनी महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त किया

भास्कर न्यूज

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी ने डोगरी कवयित्री तथा उपन्यासकार एवं साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्य श्रीमती पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त किया है। साहित्य अकादमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में अपराह्न 2.00 बजे आयोजित शोक सभा में साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता के नाते वे डोगरी एवं हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय धरोहर बनी रहेंगी। साहित्य अकादमी श्रीमती पद्मा सचदेव के परिवार के प्रति गहरी संवेदना और विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है। उनका निधन एक गहरे शून्य के साथ-साथ एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है। शोक सभा में सर्वप्रथम सचिव महोदय ने शोक संदेश पढ़ा एवं उसके बाद एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शोक सभा के बाद उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए साहित्य अकादमी के समस्त कार्यालयों को आज आधे दिन के लिए बंद किया गया। ज्ञात हो कि पद्मा सचदेव डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री थीं, जो हिंदी में भी लिखती थीं। 1940 में संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा जी ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया। 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया। इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया था। उनके साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, विभिन्न मनोभावों और विपदाओं को स्थान मिला है। वह निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्री की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रहीं। डोगरी में आठ कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियां; जिनमें – कविता, साक्षात्कार, कहानियां, उपन्यास, यात्रावृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं, प्रकाशित हुए। इसके अलावा उनकी 11 अनूदित कृतियां भी प्रकाशित हैं, जिसमें उन्होंने डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिंदी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में भी परस्पर अनुवाद किया है। उनकी अनेक कहानियों को टेली-धारावाहिकों तथा लघु फिल्मों में रूपांतरित किया गया तथा उनके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यावसयिक हिंदी सिनेमा ने भी इस्तेमाल किया। उन्होंने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत, बल्कि धुनें भी रची गईं और उन्हें लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया।

पद्मा ने गीत भी लिखे

उन्होंने डोगरी और हिंदी में कई किताबें लिखीं और उनके कविता संग्रहों में 'मेरी कविता, मेरे गीत' ने 1971 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिलाया। सचदेव ने 1973 में आयी हिंदी फिल्म "प्रेम पर्वत" के लिए 'मेरा छोटा सा घर बार' गीत भी लिखा। उन्होंने 1978 में आयी हिंदी फिल्म "आंखों देखी" के लिए भी दो गीत लिखे, जिसमें मोहम्मद रफी और सुलक्षणा पंडित द्वारा गाया मशहूर गीत "सोना रे, तुझे कैसे मिलूं" भी शामिल है।

पद्मश्री से सम्मानित डोगरी लेखिका पद्मा सचदेव का निधन, हिंदी और डोगरी दोनों को समृद्ध किया

By अरविंद कुमार | Published: August 4, 2021 05:20 PM

हिंदी और डोगरी की प्रख्यात लेखिका पद्मा सचदेव (81) का जन्म जम्मू के पुरमंडल इलाके में संस्कृत के विद्वान प्रोफे
जय देव बादु के घर में 1940 में हुआ था।

सचदेव ने 1973 में आयी हिंदी फिल्म ''प्रेम पर्बत'' के लिए 'मेरा छोटा सा घर बार' गीत भी लिखा।

Highlights

- मंगलवार शाम को अस्पताल में भर्ती कराया गया था।
- डोगरी और हिंदी में कई किताबें लिखीं।
- कविता संग्रहों में 'मेरी कविता, मेरे गीत' ने 1971 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिलाया।

नई दिल्ली: भारतीय भाषा के साहित्य के लिए आज का दिन दुखद रहा। हिंदी और डोगरी की प्रख्यात लेखिका पद्मा सचदेव आज सुबह मुंबई में निधन हो गया। वह 81 वर्ष की थीं।

उनके परिवार में उनके पति सुरेंद्र सिंह और एक बेटी हैं। साहित्य अकेडमी जनवादी लेखक संघ और हिंदी के अनेक लेखकों ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है और हिंदी डोगरी दोनों भाषा की क्षति बताया है। साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवास राव न साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य श्रीमती पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता के नाते वे डोगरी एवं हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय धरोहर बनी रहेंगी। उनका निधन एक गहरे शून्य के साथ-साथ एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है।

अकेडमी द्वारा आयोजित शोक सभा सचिव महोदय ने शोक संदेश पढ़ा एवं उसके बाद एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक सभा के बाद उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए साहित्य अकादेमी के समस्त कार्यालयों को आज आधे दिन के लिए बंद किया गया।

1940 में संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा जी ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया। 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया। इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया था।

उनके साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, विभिन्न मनोभावों और विपदाओं को स्थान मिला है। वह निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्री की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रहीं।

डोगरी में आठ कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियाँ; जिनमें - कविता, साक्षात्कार, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रावृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं, प्रकाशित हुए। इसके अलावा उनकी 11 अनूदित कृतियाँ भी प्रकाशित हैं, जिसमें उन्होंने डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिन्दी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में भी परस्पर अनुवाद किया है।

उनकीं अनेक कहानियों टेली-धारावाहिकों तथा लघु फिल्मों में रूपांतरित किया गया तथा उनके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यावसयिक हिंदी सिनेमा ने भी इस्तेमाल किया। उन्होंने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत, बल्कि धुनें भी रची गईं और उन्हें लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया।

पद्मा सचदेव जी को साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अलावा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कविता के लिए कबीर सम्मान, सरस्वती सम्मान, जम्मू-कश्मीर अकादमी का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए थे।

Web Title: Padma Shri awardee and Dogri writer Padma Sachdev passes away HindiSahitya Akademi Award in 1971

राष्ट्रीय

साहित्यकार पद्मा सचदेव का निधन

-साहित्य अकादमी ने अपनी महत्तर सदस्य के निधन पर शोक जताया

नई दिल्ली, 04 अगस्त (हि.स.)। डोगरी कवयित्री एवं उपन्यासकार और साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्य पद्मश्री पद्मा सचदेव का बुधवार को मुंबई में निधन हो गया। वह 81 वर्ष की थीं। कुछ दिनों से वे अपनी बेटी के पास मुंबई में ही थीं। उनके निधन पर साहित्य जगत में शोक की लहर है।

साहित्य अकादमी ने अपनी महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव के निधन पर शोक जताया है। नई दिल्ली के रवींद्र भवन स्थित साहित्य अकादमी के तृतीय तल के सभागार में आयोजित शोक सभा में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता के नाते वे डोगरी एवं हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय धरोहर बनी रहेंगी। साहित्य अकादमी पद्मा सचदेव के परिवार के प्रति गहरी संवेदना और विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है। उनका निधन एक गहरे शून्य के साथ-साथ एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है।

शोक सभा में सर्वप्रथम सचिव श्रीनिवास राव ने शोक संदेश पढ़ा एवं उसके बाद एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक सभा के बाद उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए साहित्य अकादमी के समस्त कार्यालयों को आज आधे दिन के लिए बंद किया गया।

पद्मा सचदेव डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री थीं, जो हिंदी में भी लिखती थीं। 17 अप्रैल 1940 को संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा सचदेव ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया। वर्ष 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया। इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया था।

उनके साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, विभिन्न मनोभावों और विपदाओं को स्थान मिला है। वह निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्री की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रहीं। डोगरी में आठ कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियाँ; जिनमें - कविता, साक्षात्कार, कहानियां, उपन्यास, यात्रा वृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं। इसके अलावा उनकी 11 अनूदित कृतियां भी प्रकाशित हैं, जिसमें उन्होंने डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिंदी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में भी परस्पर अनुवाद किया है।

उनकी अनेक कहानियों को टेली-धारावाहिकों तथा लघु फिल्मों में रूपांतरित किया गया तथा उनके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यावसायिक हिंदी सिनेमा ने भी इस्तेमाल किया। उन्होंने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत, बल्कि धुनें भी रची गईं और उन्हें लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया।

पद्मा सचदेव को साहित्य अकादमी पुरस्कार के अलावा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कविता के लिए कबीर सम्मान, सरस्वती सम्मान, जम्मू-कश्मीर अकादमी का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए थे।

हिन्दुस्थान समाचार/ पवन कुमार अरविंद/मुकुंद

Dailyhunt

डोगरी भाषा की प्रथम कवयित्री पद्मा सचदेव का निधन

संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया। 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया। इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया था।

भास्कर ऑनलाइन
साहित्य
Updated On : Wed 04th August 2021, 03:32 PM

नई दिल्ली। डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री पद्मा सचदेव का बुधवार को मुंबई में निधन हो गया। वह डोगरी के साथ हिंदी में भी लिखती थीं। पद्मा का जन्म 17 अप्रैल 1940 को पुरमण्डल में हुआ था। उनके पिता प्रो. जयदेव शर्मा हिंदी व संस्कृत के प्रकांड पंडित थे, जो 1947 में भारत के विभाजन के दौरान मारे गए थे। वे अपने चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं। उनकी शादी 1966 में 'सिंह बंधू' नाम से प्रचलित सांगीतिक जोड़ी के गायक सुरिंदर सिंह से हुई।

> *संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया। 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया। इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया था।*

उनके साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, विभिन्न मनोभावों और विपदाओं को स्थान मिला है। वह निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्री की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रहीं। डोगरी में आठ कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियाँ; जिनमें- कविता, साक्षात्कार, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रावृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं, प्रकाशित हुए।

इसके अलावा उनकी 11 अनूदित कृतियाँ भी प्रकाशित हैं, जिसमें उन्होंने डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिंदी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में भी परस्पर अनुवाद किया है। उनकीं अनेक कहानियों टेली-धारावाहिकों तथा लघु फिल्मों में रूपांतरित किया गया तथा उनके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यावसायिक हिंदी सिनेमा ने भी इस्तेमाल किया। उन्होंने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत, बल्कि धुनें भी रची गईं और उन्हें लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया।

> *पद्मा सचदेव को साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अलावा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कविता के लिए कबीर सम्मान, सरस्वती सम्मान, जम्मू-कश्मीर अकादमी का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए थे।*

साहित्य अकादेमी ने डोगरी कवयित्री तथा उपन्यासकार एवं साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त किया है। साहित्य अकादेमी में आयोजित शोक सभा में साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता के नाते वे डोगरी एवं हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय धरोहर बनी रहेंगी। साहित्य अकादेमी पद्मा सचदेव के परिवार के प्रति गहरी संवेदना और विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है। उनका निधन एक गहरे शून्य के साथ-साथ एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है।

जम्मू-कश्मीर के उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा ने पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निधन से साहित्य जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई है।उनका डोगरी के साथ-साथ हिन्दी में भी काफी योगदान रहा है।दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए उन्होंने परिवारी के साथ भी संवेदना व्यक्त की।

> *Saddened to learn about the passing away of Padma Shri Padma Sachdev Ji, the celebrated writer, poetess, and novelist from J&K. She made rich contributions to Dogri and Hindi Literature. My thoughts and prayers are with the bereaved family members, well-wishers.*
>
> *— Manoj Sinha (@manojsinha_) August 4, 2021*

नेशनल कांफ्रेंस के संभागीय अध्यक्ष देवेंद्र सिंह राणा ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके गीत उन्हें हमेशा हमारे बीच रखेंगे। खासकर जो गीत उन्होने लता मंगेश्कर से गवाएं हैं। उनके साथ हमेशा उनका नाम गूंजता रहेगा। वह हमारी प्रेरणा थी रहेंगी। वह डोगरी कों जिस मुकाम पर देखना चाहती थी उसके लिए हमें हमेशा काम करते रहना होगा।

> *Sad to hear about the demise of the great Dogri poet Padma Sachdevaji. She was a legendary figure who was a doyen of Dogri Literature and Culture. Her 'Palla Sapayiea Dograeya' sung by Lata Mangeshkar is a landmark . May her soul rest in peace . pic.twitter.com/JgWDqdwoLe*
>
> *— Devender Singh Rana (@DevenderSRana) August 4, 2021*

पद्मा सचदेव के निधन से साहित्य जगत में शोक, साहित्य अकादेमी ने जताया दुख

साहित्य में किताबें भी बहुत आएंगी और लिखने वाले भी बहुत होंगे, लेकिन पद्मा सचदेव के निधन से सहज मुस्कान के साथ लोक-जीवन की चितेरी चली गई. यह कहना है वरिष्ठ लेखिका चित्रा मुद्गल का.

aajtak.in
नई दिल्ली, 04 अगस्त 2021, (अपडेटेड 04 अगस्त 2021, 8:17 PM IST)

साहित्य में किताबें भी बहुत आएंगी और लिखने वाले भी बहुत होंगे, लेकिन पद्मा सचदेव के निधन से सहज मुस्कान के साथ लोक-जीवन की चितेरी चली गई. यह कहना है वरिष्ठ लेखिका चित्रा मुद्गल का. सच तो यह है कि कोरोना काल की भयावहता से उबर रहे लेखन जगत के लिए पद्मा सचदेव का जाना किसी झटके से कम नहीं है. हालांकि वह लंबे समय से बीमार थीं. साहित्य अकादेमी ने भी डोगरी कवयित्री, उपन्यासकार एवं साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव के निधन पर शोक व्यक्त किया है.

साहित्य अकादेमी ने शोक सभा बुलाई, जिसमें साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता के नाते वे डोगरी एवं हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय धरोहर बनी रहेंगी. साहित्य अकादेमी पद्मा सचदेव के परिवार के प्रति गहरी संवेदना और विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है. उनका निधन एक गहरे शून्य के साथ-साथ एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है.

शोक सभा में सर्वप्रथम सचिव ने शोक संदेश पढ़ा एवं उसके बाद एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की. शोक सभा के बाद उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए साहित्य अकादेमी के समस्त कार्यालयों को आज आधे दिन के लिए बंद किया गया.

साहित्य अकादेमी ने भी अपनी विज्ञप्ति में पद्मा सचदेव को याद करते हुए उनके जीवन-वृत्त के बारे में लिखा है कि पद्मा सचदेव डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री थीं, जो हिंदी में भी लिखती थीं. 1940 में संस्कृत विद्वानों के परिवार में जम्मू में जन्मीं पद्मा जी ने लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा से प्रेरित होकर अपना कवि व्यक्तित्व बनाया. 1969 में अपने पहले कविता-संग्रह मेरी कविता मेरे गीत के साथ राष्ट्रीय साहित्य परिदृश्य में पदार्पण किया. इस पुस्तक को 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया था.

लता मंगेशकर के पहले डोगरी संगीत एल्बम का श्रेय भी पद्मा को ही जाता है, जिसमें 'भला सिपाइया डोगरिया', 'तूं माला तूं' जैसे प्रसिद्ध गीत शामिल थे- जो आज भी लोग शौक से सुनते और याद करते हैं. सचदेव को शिक्षा और साहित्य में उनके योगदान के लिए 2001 में पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया था.

जम्मू कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के अतिरिक्त सचिव अरविंदर सिंह अमन की अध्यक्षता में सचदेव के लिए यहां एक शोक सभा रखी गई. उन्होंने कहा, "डोगरी भाषा में सचदेव का योगदान अनुकरणीय है. वह डोगरी संस्कृति की जीवंत उदाहरण थीं." अमन ने कहा कि, पद्मा सचदेव को अपनी मातृ भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए याद किया जाएगा क्योंकि मशहूर बॉलीवुड गायकों द्वारा गाए उनके गीतों ने डोगरी को न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में लोकप्रिय किया. सचदेव का निधन जम्मू के लिए अपूरणीय क्षति है. उन्होंने कहा कि उन्हें डोगरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के संघर्ष में अहम भूमिका के लिए भी याद रखा जाएगा.

प्रोफेसर पुष्पेश पंत ने पद्मा सचदेव के साथ अपने 5 दशक पुराने रिश्ते को याद किया और कहा कि उन्हें बीमारी और पितृसत्ता को हराने वाले एक खुशमिजाज, उदार और जीवन से भरपूर व्यक्तित्व के रूप में याद किया जाएगा. पद्मा सचदेव ने डोगरी-कश्मीरी-पंजाबी विरासत का प्रतिनिधित्व किया. उनकी शादी एक सिख परिवार में हुई थी और उनके पति सुरिंदर सिंह प्रसिद्ध सिंह बंधु जोड़ी का हिस्सा रह चुके हैं, जो उस्ताद आमिर खान के शिष्य हैं. उनका अतीत दुखों से भरा था, लेकिन फिर भी, उन्होंने कभी इस पर चर्चा नहीं की और एक समृद्ध जीवन जीया.

प्रोफेसर अमिताभ मट्टू ने पद्मा सचदेव को अपनी पीढ़ी की एक ऐसी अग्रणी डोगरी कवयित्री के रूप में याद किया, जिन्होंने भाषा के पुनरुद्धार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. वह ऐसी महिला थीं, जिन्होंने एक बुरी शादी छोड़ दी और दोबारा शादी कर ली, जो उस दौर में एक साहसी निर्णय था.

पद्मा सचदेव के साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, विभिन्न मनोभावों और विपदाओं को स्थान मिला है. वह निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्री की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रहीं. डोगरी में आठ कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियां; जिनमें - कविता, साक्षात्कार, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रावृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं, प्रकाशित हुए.

सचदेव की 11 अनूदित कृतियाँ भी प्रकाशित हैं, जिसमें उन्होंने डोगरी से हिंदी, हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिंदी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में भी परस्पर अनुवाद किया है. उनकी अनेक कहानियों टेली-धारावाहिकों तथा लघु फिल्मों में रूपांतरित किया गया तथा उनके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यवसायिक हिंदी सिनेमा ने भी इस्तेमाल किया. उन्होंने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत, बल्कि धुनें भी रची गईं और उन्हें लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया.

पद्मा सचदेव को साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अलावा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कविता के लिए कबीर सम्मान, सरस्वती सम्मान, जम्मू-कश्मीर अकादमी का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए थे.